न्यूज़ बुलेटिन :

सन्मार्ग

कालीचरण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ की प्रस्तुति

वर्ष–2 अंक–16
मासिक – मई, जून व जुलाई, 2024

सत्र का उद्देश्य

- पढ़ने और सीखने की प्रवृत्ति को रूचिकर बनाना
- शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाना
- देश और मानवता के हित में अपने को योजित करना
- नैतिक और धार्मिक मूल्यों का अवगाहन

प्रबन्धक
इं0 वी0 के0 मिश्र

प्राचार्य
प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय

सम्पादकीय

सम्पादक
राजीव यादव

उप–सम्पादक
नितिन कुमार सिंह

सहयोग
पुष्पेन्द्र कुमार

कालीचरण पी०जी० कॉलेज

हरदोई रोड, चौक, लखनऊ–226003
(लखनऊ विश्वविद्यालय)

Events at College

छात्र–छात्राओं ने जूलूस के माध्यम से मतदान के महत्व को समझाया।

दिनांक 06.05.2024 को कालीचरण पी0जी0 कॉलेज लखनऊ द्वारा वार्ड चौक लखनऊ के अंतर्गत शामिल मालीखां सराय (महाविद्यालय द्वारा गोद ली हुई बस्ती) में आगामी लोक सभा चुनावों में शत–प्रतिशत मतदान हेतु मतदाता जागरूकता के लिए छात्रों द्वारा घर–घर जाकर लोगों से संपर्क स्थापित किया। छात्र–छात्राओं ने जूलूस के माध्यम से मतदान के महत्व को समझाया। चुनाव आयोग के फ्लैगशिप कार्यक्रम स्वीप जिसका मुख्य उद्देश्य भारत में मतदाता साक्षरता व मतदाता जागरूकता हेतु कार्यक्रमों का आयोजन करना है। स्वीप के अंतर्गत महाविद्यालय में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। महाविद्यालय में 18 एवं इससे अधिक उम्र की सभी विद्यार्थियों का शत–प्रतिशत नामांकन कराकर वोटर कार्ड बनवाया गया। महाविद्यालय में कार्यरत एन0एस0एस0 की चारों इकाईयों के माध्यम से विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी नियमित रूप से मतदाता जागरूकता हेतु कार्यक्रमों एवं गतिविधियों जैसे पोस्टर, स्लोगन कंपटीशन, गोद ली गई बस्तियों में जागरूकता रैली का आयोजन, मतदाता शपथ, हस्ताक्षर अभियान इत्यादि के माध्यम से अनेक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

10 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सामूहिक योगाभ्यास का आयोजन

21 जून, 2024 को 10 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सामूहिक योगाभ्यास का आयोजन NSS की इकाईयों के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। इस अवसर पर प्रयाग आरोग्य केन्द्र के योगाचार्य

श्री विनीत यादव एवं सुश्री आफरीन के द्वारा योग प्रोटोकाल का अभ्यास कराया गया तथा साथ ही साथ विभिन्न आसनों के लाभों के बारे में भी अवगत कराया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय, प्रो0 मीना कुमारी, प्रो0 विश्वनाथ मिश्रा, प्रो0 मनोज कुमार पाण्डेय, प्रो0 कल्याणी द्विवेदी, डॉ0 अल्का द्विवेदी, डॉ0 मुकेश कुमार मिश्रा, डॉ0 अरूण यादव, श्री राज कुमार सिंह एवं श्री सत्य प्रकाश सहित समस्त प्राध्यापकगण, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भी प्रतिभाग किया। योगाभ्यास के अंत में सभी ने निरन्तर योग क्रियाओं को करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का सफल आयोजन एवं संचालन शारीरिक शिक्षा विभाग के डॉ0 मुकेश कुमार मिश्रा ने किया।

विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर महाविद्यालय प्रांगण में फलदार वृक्षारोपण हुआ

11 जुलाई, 2024 विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर महाविद्यालय प्रांगण में संस्था के प्रमुख शिल्पी पूर्व राज्यपाल स्व0 लाल जी टण्डन की प्रतिमा के पास विकसित हो रहे पार्क में फलदार वृक्षारोपण हुआ। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं चौक से लगातार दूसरी बार पार्षद श्री अनुराग मिश्रा जी की अनुवाई में वृक्षारोपण हुआ। आप हमारे महाविद्यालय के पुरा विद्यार्थी (Alumni) एवं पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष रहे हैं। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय, मुख्य नियंता श्री डी0सी0डी0आर0 पांण्डेय, इंटर कॉलेज के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ0 सुशील त्रिपाठी, अन्य प्राध्यापकगण, विद्यालय के कर्मचारीगण आदि ने वृक्षारोपण किया तथा विश्व जनसंख्या के सुखी एवं मंगलमय जीवन की कामना की।

कालीचरण महाविद्यालय में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया

20 जुलाई, 2024 को कालीचरण महाविद्यालय में पौधरोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तर–प्रदेश सरकार की योजना 'पेड़ लगाओं पेड़ बचाओं' वृक्षारोपण जन अभियान–2024 के अंतर्गत 20 जुलाई 2024 को महाविद्यालय परिसर में लगभग 300 पौधे लगाये गये।

पूर्व राज्यपाल स्व0 लालजी टण्डन 'बाबूजी' की पुण्यतिथि पर महाविद्यालय परिसर में स्थित बाबूजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

21 जुलाई, 2024 को कालीचरण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ में पूर्व राज्यपाल स्व0 लालजी टण्डन 'बाबूजी' की पुण्यतिथि पर परिसर में स्थित बाबूजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। सभी ने श्रद्धा सुमन अर्पित कर कर उनको भावपूर्ण स्मरण किया तथा उनके जीवन से संबंधित अनेक घटनाओं, लखनऊ

तथा कालीचरण महाविद्यालय एवं इण्टरमीडिएट कॉलेज के कायाकल्प में उनके अमर योगदान का उल्लेख करते हुए सभी वक्ताओं ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

इस कार्यक्रम में बाबूजी के सुपुत्र श्री सुबोध टण्डन और श्री अमित टण्डन जी उपस्थित रहे और बाबूजी को स्मरण करते हुए भावुक हुए। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 चन्द्र मोहन उपाध्याय जी ने बाबूजी को याद करते हुए कहा कि उनके जैसा आकाशधर्मा व्यक्तित्व मिलना अब सम्भव नहीं। महाविद्यालय के विकास और निर्माण के लिए उनको सदा याद किया जाएगा। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के मुख्यनियंता डॉ0 डी0सी0डी0आर0 पांडेय, प्रो0 मीना कुमारी, डॉ0 वी0एन0 मिश्रा, प्रो0 मनोज कुमार पाण्डेय तथा समस्त प्राध्यापक, कर्मचारी एवं बाबूजी से स्नेह रखने वाले अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

.....

Teachers Corner

लाजवाब कमलेश्वर : संदर्भ कहानी चप्पल

प्रोफेसर मनोज कुमार पाण्डेय
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
कालीचरण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

हिन्दी के सभी प्रतिष्ठित कहानीकारों ने बहुत अच्छी–अच्छी कहानियाँ लिखी हैं फिर उनमें प्रेमचन्द हो या जैनेन्द्र, यशपाल हों या जयशंकर प्रसाद, कितनों के नाम गिनाऊँ, सभी ने अच्छी–अच्छी कहानियाँ लिखी हैं।

कमलेश्वर की कहानियों से मेरा पहला परिचय तब हुआ जब मैंने बी0ए0 में 'नीली झील' पढ़ी। बहुत अच्छी लगी थी ये कहानी मुझे, फिर मैंने 'राजा निरबंसिया' पढ़ी और बरसों इन कहानियों को पढ़ाया। कहानी कला के तत्वों के आधार पर ये कहानियाँ इतनी खरी हैं कि इन्हें खरा सोना कहा जा सकता है और फिर ये हिन्दी कथा जगत की मील का पत्थर तो हैं ही।

मेरी दृष्टि में बड़ा कहानीकार वह होता है, जो छोटी–छोटी घटनाओं में छिपी बड़ी संवेदनाएँ देखते हैं और उन्हें पहचान कर व्यापक पटल परकल्पना–शब्दों–समसामयिकता– दृश्यबंधों आदि रंगों में सजाकर ऐसा प्रस्तुत करें कि उनसे गुजरते हुए कलाग्राही उनकी विशेषताओं के प्रभाव से अनछुए न रह जाएं।

मेरे मुत्तालिक कमलेश्वर ऐसे ही कहानीकार हैं। अभी कुछ अर्से पहले मैंने उनकी कहानी 'चप्पल' पढ़ी। कहानी पढ़ते ही मेरे भीतर से निकला लाजवाब कमलेश्वर। एक छोटी घटना जिसका लेखक साक्षी होता है और उसे ऐसे दिव्य रूप में प्रस्तुत करता है कि पढ़ने वाला उसकी दिव्यता से अनछुआ रह ही ना पाए। कहानी चप्पल में यह अनुभूत किया जा सकता है। आप पढ़कर देख सकते हैं।

लेखक कहानी के प्रारम्भ में लिखता है – "कहानी बहुत छोटी सी है। मुझे आल इण्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट की सातवीं मंजिल पर जाना था। आई0सी0यू0 में। गाड़ी पार्क कर के चला तो मन बहुत दार्शनिक हो उठा कितना दुःख और कष्ट है दुनिया में..... लगातार एक लड़ाई मृत्यु से चल रही है..... और उस दुःख और कष्ट को सहते हुए लोग–सब एक से हैं।"1

कहानी का मजमून ये है कि लेखक अपनी एक परिचित (संध्या) को जिनकी बड़ी आँत की सर्जरी आल इण्डिया मेडिकल इन्स्टीट्यूट में हुई है, जो स्वयं चिकित्सक हैं, उन्हें सातवीं मंजिल पर स्थित आई0सी0यू0 वार्ड में देखने गया है। अस्पताल में पहुँचने पर कैसे हमारे मन में दार्शनिक विचार आते हैं और कैसे हम इन विचारों में निमग्न हो जाते हैं, इन्हें भी इसी कहानी में लेखक ने बखूबी दर्शाया है – "दर्द और भावना तो दर्द और यातना ही है– चाहे वह किसी को हो। इसमें इंसान और इंसान में भेद नहीं किया जा सकता। दुनिया में हर माँ के दूध का रंग एक है। खून और आंसुओं का रंग भी एक है। दूध, खून और आंसुओं का रंग नहीं बदला जा सकता..... शायद इसी तरह दुःख, कष्ट और यातना के रंगों का बटवारा नहीं किया जा सकता। इस विराट मानवीय दर्शन से मुझे राहत मिली थी..... मेरे भीतर से सदियां बोलने लगी थीं। एक पुरानी सभ्यता का वारिस होने के नाते यह मानसिक सुविधा जरूर है कि तुम हर बात, घटना या दुर्घटना का कोई दार्शनिक उत्तर खोज सकते हो। समाधान चाहे न–मिले, पर एक अमूर्त दार्शनिक उत्तर जरूर मिल जाता है।"2

यह दार्शनिकता लेखक को तब भी अनुभूत होती है जब वह सातवीं मंजिल पर जाने के लिए लिफ्ट की ओर इमरजेंसी वार्ड से गुजरते हुए जाता है– "रास्ता इंमरजेंसी वार्ड से ही जाता था। एक बेहद दर्द भरी चीख इमरजेंसी वार्ड से आ रही थी.....

..... वह दर्द भरी चीख तो दर्द भरी चीख ही थी..... दूध, खून और आंसुओं के रंगों की तरह चीख की तकलीफ भी तो एक सी थी। उसमें विषमता कहाँ थी?"3

लेखक एम्स गया है अपनी एक परिचित को देखने, जो वहाँ सातवीं मंजिल पर आई0सी0यू0 में भर्ती है। बड़ी छोटी सी यात्रा है लिफ्ट की, आखिर लिफ्ट में समय ही कितना लगता है गन्तव्य तक पहुँचने में। पर इसी अल्प यात्रा में लेखक को कहानी भी मिल जाती है और उसका किरदार भी और तो और कहानी का शीर्षक भी मिल जाता है। क्यूँ न इसे देखते चला जाए– "आखिर लिफ्ट आई। 'सेवेन–सात' मैंने कहा और संध्या के बारे सोचने लगा। दो–तीन वार्ड–ब्वाय तीसरी और चौथी मंजिल पर उतर गए।

पांचवीं मंजिल पर लिफ्ट रूकी तो कुछ लोगा ऊपर जाने के लिए इंतजार कर रहे थे। इन्हीं लोगों में था वह पांच साल का बच्चा–अस्पताल की धारीदार बहुत बड़ी सी कमीज़ पहने हुए..... शायद उसका बाप, वह जरूर ही उसका होगा, उसे गोद में उठाए हुए था..... उस बच्चे के पैरों में छोटी–छोटी नीली हवाई चप्पल थीं, जो गोद में होने के कारण उसके छोटे पैरों में उलझी हुई थी। अपने पैरों से गिरती हुई चप्पलों को धीरे से उलझाते हुए बच्चा बोला, "बाबा! चप्पल"

उसके बाप ने चप्पलें उसके पैारों में ठीक कर दीं। वार्ड ब्वाय व्हील–चेयर आगे बढ़ाते हुए बोला, "आ जा, इसमें बैठेगा।" बच्चा हल्के से हंसा..... वार्ड ब्वॉय ने उसे कुर्सी में बैठा दिया..... उसे बैठने में कुछ तकलीफ हुई पर वह कुर्सी के हत्थे पर अपने नन्हें–नन्हें हाथ पटकता हुआ भी हंसता रहा। दर्द का एहसास तो उसे भी था पर दर्द के कारण का एहसास उसे बिल्कुल नहीं था। वह कर्सी में ऐसे बैठा था जैसे सिंहासन पर बैठा हो..... कुर्सी बड़ी थी और वह छोटा था। वार्ड ब्वॉय ने कुर्सी को पुश किया। वह लिफ्ट में आ गया। उसके साथ ही उसका बाप भी। उसका बाप उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरता रहा।

लिफ्ट सात पर रूका, पर मैं नहीं निकला। दो–एक लोग निकल गए। लिफ्ट आठ पर रूका। यहीं आपरेशन थियेटर थे। दरवाजा खुला तो एक नर्स जिसके हाथ में पर्चे थे, से देखते हुए बोली, "आ गया तू!"

उस बच्चे ने धीरे से मुस्कुराते हुए नर्स में जैसे–हाँ! उसकी आँखे नर्स से शर्मा रही थीं और उनमें बचपन की बड़ी मासूम दुधिया चमक रही थी। व्हील–चेयर एक झटके के साथ लिफ्ट से बाहर गई..... नर्स ने उसका कंधा हलके से थपथपाया..... ...

"बाबा! चप्पल", वह तभी बोला, "मेरी चप्पल....."

उसकी एक चप्पल लिफ्ट के पास गिर गई थी। उसके बाप ने उसे वह चप्पल भी पहना दी। उसने दोनों पैरों की उंगलियों को सिकोड़ा और अपनी चप्पलें पैरों में कस लीं।

लिफ्ट बंद हुआ और नीचे उतर गया।

वार्ड ब्वॉय बच्चे की कुर्सी को पुश करता हुआ आपरेशन थिएटर वाले बरामदे में मुड़ गया। नर्स उसके साथ चली गई। उसका बाप धीरे–धीरे उन्हीं के पीछे चला गया।

तब मुझे याद आया कि मुझे सातवीं मंजिल पर जाना था। संध्या वहीं थी। मैं सीढ़ियों से एक मंजिल उतर गया"4

एक लेखक कैसे अपने किरदार और कथानक से सहज ही जुड़ जाता है और ऐसा जुड़ता है कि सब कुछ भूज लाता है। यहाँ दृष्टव्य है। "जाना था जापान पहुँच गए चीन" वाला हाल उसका हो जाता है, यहाँ कुछ ऐसा ही होता दीख पड़ता है बच्चे के हाव–भाव, कार्य–कलाप लेखक को ऐसा बाँध लेते हैं कि वह सातवीं मंजिल पर जाने के बजाय आठवीं मंजिल पर पहुँच जाता है।

अपनी परिचित संध्या, उसके डॉक्टर पति और उनके परिचित डॉक्टरों के हुजूम से लेखक जब ढाई–तीन घंटे बाद मुक्त होकर वापसी में लिफ्ट के सामने पहुँचता है जो ऊपर जाती हुई लिफ्ट में चढ़ जाता है कि उसे छोड़ने आये लोगों को रूकना न पड़े इसीलिए और फिर आठवीं मंजिल पर उसे पुनः अपना किरदार–कथानक और उनसे जुड़े तथ्य मिल जाते हैं। लेखक बयान करता है–"लिफ्ट आठ पर पहुँचा। वहाँ ज्यादा लोग नहीं थें। पर एक स्ट्रेचर था और दो–तीन लोग। स्ट्रेचर भीतर आया। उसी के साथ लोग भी। स्ट्रेचर पर चादर में लिपटा वही बच्चा पड़ा हुआ था। वह बेहोश था। वह आपरेशन के बाद लौट रहा था। उसके गालों और गर्दन के रेशमी रोएं पसीने से भीगे हुए थे ..... माथे पर बाल भी पसीने के कारण चिपके हुए थे।

उसका बाप एक हाथ में ग्लूकोज की बोतल पकड़े हुए था ..... ग्लूकोज की नली की सुई उसकी थकी और दूधभरी बांह की धमनी में लगी हुए थी– उसका बाप लगातार उसे देख रहा था..... वह शायद पसीने से माथे पर चिपके उसके बालों को हटाना चाहता था, इसलिए उसने दूसरा हाथ ऊपर किया, पर उस हाथ में बच्चे की चप्पलें उसकी उंगलियों में उलझी हुई थीं..... ... वह छोटी–छोटी नीली हवाई चप्पलें.....

मैंने बच्चे को देखा..... फिर उसके निरीह बाप को।
मेरे मुँह से अनायास निकल ही गया, "इसका ....."
"इसकी टांग काटी गई है।" वार्ड ब्वॉय ने बाप की मुश्किल हल कर दी।
"ओह!..... कुछ हो गया था?" मैने जैसे उसके बाप से ही पूछा।
वे मुझे देखकर चुप रह गए..... उसके ओंठ बुदबुदाकर थम गए.....

लेकिन वह भी चुप नहीं रह सका। एक पल बाद ही बोला, "जाँघ की हड्डी टूट गई थी.....

"चोट लगी थी?"

"नहीं..... सड़क पार कर रहा था..... एक गाड़ी ने मार दिया" वह बोला और मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे टक्कर मारने वाली गाड़ी मेरी ही थी।

फिर वह वीतराग होकर अपने बेटे को देखने लगा।

पांचवी मंजिल पर लिफ्ट रूकी। बच्चों का वार्ड उसी मंजिल पर था। लिफ्ट में आने वाले कई लोग थे। ..... वार्ड ब्वॉय ने झटका देकर स्ट्रेचर निकाला तो बच्चा बोरे की तरह हिल उठा, अनायास ही मेरे मुँह से निकल गया, "धीरे से"

"ये तो बेहोश है..... इसे क्या पता?..... स्ट्रेचर को बाहर पुश करते हुए वार्ड ब्वॉय ने कहा।

उस बच्चे का बाप खुले दरवाजे से टकराता हुआ बाहर निकला तो एक नर्स ने उसके हाथ की ग्लूकोज की बोतल पकड़ ली।

लिफ्ट के बाहर पहुँचते ही उसके बाप ने उसकी दोनों नीली हवाई चप्पलें वहीं कोने में फेंक दीं..... फिर कुछ सोचकर कि शायद उसका बेटा होश में आते ही चप्पलें मांगेगा उसने पहले एक चप्पल उठाई..... फिर दूसरी भी उठा ली और स्ट्रेचर के पीछ–पीछे वार्ड की तरह जाने लगा।

मुझे नहीं मालूम कि उसका बेटा जब होश में आएगा तो क्या मांगेगा चप्पल मांगेगा या चप्पलों को देखकर अपना पैर मांगेगा..... बेसब्री से इंतजार करते लोग लिफ्टमैन ने बटन दबाया। दरवाजा बंद हुआ। वह लोहे का बंद कमरा नीचे उतरने लगा।"5

एक पाँच साल के बच्चे की आसक्तिमय प्रवृत्ति का कितना सजीव वर्णन किया है इस कहानी में लेखक ने यह दर्शनीय है और श्लाघनीय है। बच्चा चोटिल है उसकी जाँघ की हड्डी टूट गई असह्नीय पीड़ा होती है ऐसे में पर यह बच्चा है पीड़ा के प्रति अबोध पर अपनी चप्पल जैसी वस्तु के प्रति बोधवान् परम प्रज्ञ। इसे यह फिकर नहीं है कि पैरों की हालत कैसी है? हाँ, यह फिकर जरूर है कि उसकी चप्पल कहीं छूट न जाए, खो न जाए। पिता के दर्द से उसे क्या लेना! अपनी पीड़ा की उसे क्या चिंता। उसे तो चिंता है उसकी चप्पलों की यही है बच्चे की प्रकृति, यही है उसका बाल्यावस्था जनित मोह। बाल मनोविज्ञान की इतनी गहरी समझ कमलेश्वर जैसे सामर्थ्यवान लेखक में ही हो सकती है। जिसे केवल अत्यल्प सम्पर्क की एक घटना में वे अनुभूत कर लेते हैं, जान लेते हैं।

बात यहीं नहीं ठहरती अस्पताल जाने वाले लोग कैसे वहाँ पहुँचकर सन्त–दार्शनिक जैसा चिन्तन करने लगते हैं यह बात भी लेखक ने बड़ी कुशलता और निपुणता के साथ हमारे समक्ष रखी है, उसे हास्पिटली सन्यास की संज्ञा दी जा सकती है। दर्द बड़ा पीड़ादायी होता है पर जब हम ऐसे वातावरण में पहुँच जाते हैं जहाँ चारों तरफ पीड़ा ही पीड़ा दिखाई दे तो अपनी पीड़ा को स्वाभाविक रूप से सहने की शक्ति स्वतः ही आ जाती है। इमरजेन्सी वार्ड से गुजरते समय लेखक ऐसे वातावरण का साक्षात्कार स्वयं करता है।

जीवन आशा पर ही टिका है, अस्पताल में उसके दर्शन होते है। लोग आते हैं दुःख लेकर–दर्द लेकर पर एक उम्मीद के साथ कि वे ठीक हो जाएंगे, फिर से सामान्य जीवन जी सकेंगे। यह भाव भी यह कहानी हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

अस्पताल मे ंतो हम सभी जाते हैं कभी न कभी, अपनों को देखने या दिखाने। पर अस्पताल के मरीजों में ही अपना किरदार ढूंढ लेना, उन मरीजों के दुःख–दर्द में 'चप्पल'जैसी कहानी खोज लेना और इतने शानदार तरीके से उसे कम से कम अल्फाजों में उतार कर पाठकों के सामने पेश कर देना और सोचने पर विवश कर देना। ये कमलेश्वर जैसा कोई बिरला कहानीकार ही कर सकता है। सचमुच कमलेश्वर लाजवाब हैं– लाजवाब।

संदर्भ सूची–

1. चप्पल, कमलेश्वर, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियाँ, सम्पादक कमलेश्वर, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, चौथी आवृत्ति 2011, पृ0 54
2. वही, पृ0 54
3. वही, पृ0 54–55
4. वही, पृ0 56–57
5. वही, पृ0 60–61